उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक:467/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 19–06–2025

दिनांक :19 जून, 2025 समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष उपस्थितिः संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की सातवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की सातवीं बैठक, डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 19 जून, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक पादप रोग वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक; बी.एच.यू. वाराणसी के वैज्ञानिक; बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक; सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; उद्यान विभाग; मत्स्य पालन विभाग के वैज्ञानिकों तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश में मानसून की संभावित प्रगति के दृष्टिगत प्रदेश के ज्यादातर क्षेत्रों में मेघगर्जन/वज्रपात के साथ हल्की से मध्यम वर्षा के परिणामस्वरूप प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य से अधिक होने की संभावना है।
- मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, कोदों आदि की बुवाई का उचित समय है। बुवाई के पूर्व बीज शोधन हेतु स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट 90 प्रतिशत+टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत की 4 ग्रा. मात्रा को 25 कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करें।
- बुवाई से पूर्व कृषक जैविक व हरी खादों के साथ संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें।
- अचानक बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों के लिए धान की किस्मों यथा आई.आर. 64–सब 1, स्वर्णा सब–1, जल लहरी, जलप्रिया एवं साँभा महसूरी–सब 1 (पकने की अवधि 145 दिन) के बीज का प्रयोग करें।
- रोपाई वाले खेत में 1 फीट ऊँची मेढ़ बनाएं ताकि वर्षा जल संचित कर लाभ लिया जा सके।
- धान के खेतों में रोपाई से पूर्व मिट्टी पलटने वाले हल से 1 से 2 बार जुताई अवश्य कर लें जिससे वर्षा के जल का संचय हो साथ ही खरपतवार भी नष्ट हो जाय।
- मई माह में अंत में डाली गई नर्सरी की पौध रोपाई से पूर्व धान की जड़ों को शोधित कर रोपाई करें।
- दलहनी फसलों की बुवाई का समय है अतः किसान भाई क्षेत्रवार संस्तुत दलहनी फसलों की प्रजातियों की बुवाई प्रथम वर्षा के साथ प्रारंभ करें।
- फलों में परिपक्वता आने पर प्रातः अथवा सायंकाल फलों की 8–10 मि.मी. डंठल सहित तुड़ाई करें जिससे उन्हें फील्ड हीट (दोपहर की गर्मी) से बचा कर भण्डारण अवधि को बढ़ाया जा सके।
- 18001805141–पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (20–26 जून, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह प्रदेश के भाभर तराई के पश्चिमी भाग एवं विध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री से.; दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 32 से 34 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग तथा बुंदेलखण्ड एवं विध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य

कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री से. रहने की संभावना है। इस सप्ताह के आरंभिक चरण में प्रदेश के दक्षिणी भाग में बहुत भारी वर्षा होने की संभावना है।

कृषि विभाग से दिनांक 19 जून, 2025 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 106.05 लाख हे. के सापेक्ष 0.95 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 0.9 प्रतिशत है। अब तक धान की नर्सरी लक्ष्य 4.33 लाख हे. के सापेक्ष 3.90 लाख हे. में डाली जा चुकी है जो लक्ष्य का 90.03 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 65.00 लाख हे. के सापेक्ष 0.16 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 0.25 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.83 लाख हे. के सापेक्ष 0.18 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 3.01 लाख हे. के सापेक्ष 0.29 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 11.284 लाख हे. के सापेक्ष 0.06 लाख हे. की बुवाई एवं अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 0.14 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है।

धान की खेती

- धान की सीधी बुआई सीड ड्रिल द्वारा करें।
- धान की कम अवधि (110 से 125 दिन) की उन्नत किस्मों सी.ओ.–51, नरेन्द्र–80, आई.आर.–50, नरेन्द्र–97, पंत धान–12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान–2, मालवीय धान–917, शियाट्स धान–5 की नर्सरी डालें अथवा सीधी बुवाई करें।
- नर्सरी में जिंक की कमी के कारण होने वाले खैरा रोग जिसमें पत्तियां पीली पड़ जाती है एवं बाद में कत्थई रंग के धब्बे पड़ जाते है, लक्षण दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल के साथ अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी के घोल के साथ छिड़काव करें।
- नर्सरी में लौह तत्व की कमी के कारण होने वाले सफेदा रोग, जिसमें पत्तियां कागज के समान सफेद रंग की निकलती है, के नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी घोल के साथ छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- पश्चिमी उ.प्र. के सिंचित क्षेत्रों हेतु अरहर की अगेती संस्तुत प्रजाति पारस (पी.ए.–291), मध्य उत्तर प्रदेश हेतु पूसा अरहर–16, सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों यू.पी.ए.एस.–120, टा–21 तथा पूसा–992, पी.ए.–6, पी.ए.–7, पूसा–2018–4 की बुवाई यथाशीघ्र करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

श्री अन्न की खेती

- ज्वार की संस्तुत संकुल प्रजातियों यथा वर्षा, सी.एस.वी.–13, सी.एस.वी.–15, एस.पी.बी.–1388 (बुन्देला), विजेता तथा संकर प्रजातियों सी.एस.एच.–16, सी.एस.एच.–9, सी.एस.एच.–14, सी.एस.एच.–18, सी.एस.एच.–13 व सी.एस.एच.–23 के बीज की व्यवस्था करें ताकि जून के अंतिम सप्ताह में बुवाई की जा सकें।
- सावां की प्रजाति टी–46, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, डी.एच.बी.एम.–93–3, डी.एच.बी.एम.–33–3 की बुआई करें।
- कोदों की प्रजाति जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जे.पी.वी.के.–3 की बुआई करें।
- कोदों में बीज जनित रोग अरगट की रोकथाम हेतु बीज को बोने से पहले 0.2 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोकर तुरंत अरगट से ग्रसित बीजों को अलग कर दें तथा शुद्ध पानी से 4 से 5 बार धोकर बीज का प्रयोग करें।

मक्का की खेती

- मक्का की शीघ्र पकने वाली संकर किस्मों जे.एच–3459, प्रकाश, पूसा संकर मक्का–5, विवेक संकर मक्का–27, एम.एम.एच.–113, एक्स–1123 जी (3342) तथा संकुल किस्मों आजाद उत्तम, प्रगति, गौरव, कंचन, सूर्या तथा शियाट्स मक्का–2 की बुवाई जून के अंत तक समाप्त करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व 1 किग्रा0 बीज को 4–6 ग्रा0 ट्राइकोडर्मा प्रति किग्रा0 बीज अथवा 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करें।

- प्रदेश की जलवायु मक्के में फॉल आर्मी वर्म के लिये अनुकूल है। इस कीट की प्रथम अवस्था सूंडी (लार्वा) सर्वाधिक हानिकारक होती है। इसके जैविक नियंत्रण हेतु एन.पी.वी. 250 एल.ई. अथवा मेटाराइजियम एनिप्सोली 5 ग्रा. प्रति ली. अथवा बैसिलस थुरिनजैनेसिस 2 ग्रा. प्रति ली. की दर से प्रयोग करना लाभकारी होता है।

सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश हेतु संस्तुत उन्नत किस्मों यथा पी.के. 472, पी.एस. 564, पी.के. 416, पी.एस. 1024, पूसा–16, पी.एस.1042, जे.एस. 20–34, जे.एस. 20–98, पंत सोयाबीन–26, जवाहर सोयाबीन 20–116, बुंदेलखण्ड हेतु संस्तुत जी.एस.–2, जे.एस.–93–5, जे.एस.–72–44, जे.एस. –75–46, पूसा–20, जे.एस.–335, एम.ए.यू.एस.–47, एन.आर.सी.–37 तथा तराई क्षेत्र तथा भाभर क्षेत्र हेतु संस्तुत पी.के.–262 की बुवाई उचित नमी तथा उचित तापमान पर करें।

गन्ना की खेती

- पेड़ी फसल में अधिक पैदावार लेने हेतु सिंचाई, उर्वरक प्रबंधन एवं निराई–गुड़ाई समय पर करें।
- बसंतकालीन गन्ने में सिंचाई पश्चात् 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति एकड़ की दर से टापड्रेसिंग कर गुड़ाई करें।
- चोटीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु ग्रसित नवजात पौधे को जमीन की सतह से काटकर नष्ट कर दें अत्यधिक प्रकोप की दशा में क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150 मि.ली. कीटनाशक को 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से ड्रेचिंग कर सिंचाई करें।
- पोक्का बोइंग रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 0.2 प्रतिशत अथवा कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत का घोल बनाकर पत्तियों पर छिड़काव करें।
- लाल सड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनएट मिथाइल 0.2 प्रतिशत की ड्रेचिंग करें।
- जिन किसान भाईयों ने शरदकालीन गन्ने की बुवाई हेतु खेत खाली छोड़ रखा है उसमें हरी खाद की पूर्ति हेतु ढ़ैचा की बुवाई कर दें।

सब्जियों की खेती

- खरीफ की अगेती सब्जियों के बीज को ट्राईकोडर्मा पाउडर 5–6 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें।
- पौधशाला हेतु ऊंचे एवं ढालू स्थान का चयन करें, जिससे वर्षा के पानी का निकास आसानी से हो सके। नर्सरी डालने के लिए 7.5 मीटर लम्बा, 1 मीटर चौड़ा और 10–15 से.मी. ऊंचा स्थान बनाये।
- कद्दूवर्गीय फसलों में हरा फुदका एवं सफेद मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस. सी. 1.0 मिली. रसायन एवं तना व फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 एस.सी. की 1.0 मिली. रसायन की मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे. की दर से लगायें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- भिण्डी की फसल में सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए ग्रसित पौधे को उखाड़कर जला दें या मिट्टी में दबा दें तथा रोग वाहक कीट को नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. लगायें, इसके रासायनिक उपचार में इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- हल्दी में आवश्यतानुसार निराई–गुड़ाई एवं सिंचाई करें।

बागवानी

- आम एवं नींबू के बागों में निश्चित अन्तराल पर सिंचाई कर नमी बनाये रखें।
- फलों के बाग के रोपण हेतु मई माह में खोदे गये गढ्ढों की भराई करने के लिए ऊपर की आधी मिट्टी में गोबर की सड़ी हुई खाद को मिलाकर जमीन की सतह से 15 से 20 सेन्टीमीटर ऊपर तक भराई कर लें।
- आम, अमरूद एवं नीबू में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 में 6 से 8 फिट की उचांई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति

लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20–25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहें।

- फलों की भण्डारण क्षमता बढ़ाने हेतु तुड़ाई पूर्व चौसा किस्म तथा अन्य देर से पकने वाले किस्मों के लिए 10 दिनों के अन्तराल पर तीन छिड़काव डाइहाइड्रेटेड कैल्शियम क्लोराइड (221ग्रा./10ली.) का करें।
- आम को एकसार पकाने के लिए 750 पी.पी.एम. इथरेल (1.8 मि.ली./लीटर) गुनगुने पानी (52 ± 2 डिग्री. से.) के घोल में 5 मिनट तक डुबोकर तदोपरान्त छाया में सुखाने के बाद भण्डारण करें। इसी घोल में 0.5 ग्रा./लीटर की दर से कोर्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल मिलाने से अन्य फफूंदी भी नष्ट हो जाती है और आम अच्छा पकता है।
- केले के नवीन बाग लगाने हेतु ऊतक संवर्धित रोगरोधी जी–9 प्रजाति लगाये। पुराने केले के बागों में अगली फसल लेने हेतु केले की स्वस्थ पुत्ती को छोड़कर शेष की कटाई करें।

<u>पशुपालन</u>

- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यकम के अन्तर्गत गलाघोंटू बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- प्रजनन सम्बन्धी समस्त रोगों के निराकरण हेतु पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि हरा चारा, भूसा, पशु आहार के अतिरिक्त खनिज लवण भी अवश्य खिलायें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- बदलते मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संकमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय योजना अन्तर्गत मण्डल/जिला स्तर पर पशु आरोग्य मेलों का आयोजन किया जा रहा है, इन मेलों में निःशुल्क चिकित्सा, दवापान, बधियाकरण, टीकाकरण, लघु शल्य चिकित्सा, अल्ट्रासाउण्ड मशीन द्वारा गर्भ परीक्षण, पशुधन बीमा तथा पशुपालन कार्य हेतु इच्छुक पशुपालकों को किसान केडिट कार्ड के अन्तर्गत पशुपालन घटक के अधीन ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ–साथ गोष्ठियों का आयोजन भी सम्पादित किया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं0–1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

<u>मत्स्य पालन</u>

- ब्रूडर मछलियों की उचित देखभाल करें।
- भारतीय/विदेशी कार्प मछलियों का प्रजनन प्रारम्भ कर दें।
- हैचरी/हॉपा ब्रिडिंग के प्रबंधन एवं संचालन के लिए विशेषज्ञों से समय–समय पर सलाह लेते रहें।
- मत्स्य बीज संचयन से पूर्व तालाब की तैयारी जैसे–जलीय खरपतवार की निकासी, जलीय कीटों तथा अवांछित मछलियों का उन्मूलन कर लें।
- हैचरियों से स्पॉन प्राप्त कर नर्सरी तालाबों में संचयन करें।
- ग्रो आउट तालाब में फिंगरलिंग मत्स्य बीज संचयन 2000–4000 प्रति एकड़ की दर से जून के अंतिम सप्ताह में शुरू कर दें।

<u>रेशम</u>

- टसर बीजागारों में संरक्षित कोयों में प्यूपा को जीवित रखने के लिए ठण्ड बनाये रखें।
- सिंचित क्षेत्र में शहतूत पौधों की तथा शहतूत/अर्जुन की नर्सरी की आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- रेशम फार्मों की सुरक्षा हेतु बबूल की हेज तैयार करने हेतु फार्मों के चारों तरफ खाई में बबूल बीज की बुवाई करें।
- नये क्षेत्र में वृक्षारोपण कराने हेतु आवश्यक तैयारी करें।

वानिकी

- बंसुरी विधि द्वारा बांस के रोपण का कार्य करें।
- वृक्षारोपण से पहले पौधों को नर्सरी से निकालकर 10 से 20 दिनों के लिये विश्राम अवधि में रखें।
- पौधों को छाया स्थान पर रखें तथा फुहारे विधि द्वारा हल्की सिंचाई करते रहे।

राज्य आपदा प्रबंधन

- आंधी, तूफान, चक्रवात से बचाव हेतु सभी विद्युत उपकरणों को बंद रखें, यात्रा कर रहें हो तो सुरक्षित स्थान देखकर रूक जाए। टिन छतों, हार्डिंग, क्षतिग्रस्त मकान, मोबाइल टावर एवं बिजली के खम्भों से दूर रहें, धातु से बनी वस्तुओं का प्रयोग न करें, पेड़ के नीचे शरण न लें, घर के बाहर जाने की अधिकारिक सूचना न मिलने तक बाहर न निकलें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 26 जून, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः–

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं। क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह) 19/6/25
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।

16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

19.6.25

(जय पाल)
वैज्ञानिक अधिकारी

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की सातवीं बैठक दिनांक 19 जून, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
3. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
5. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
6. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ (ऑनलाइन)।
7. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
8. डा. सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
9. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (ऑनलाइन)।
10. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
11. डा. प्रिया रंजन कुमार, सह प्राध्यापक (पशु चिकित्सा स्त्री रोग), बी.एच.यू. वाराणसी (ऑनलाइन)।
12. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस) (ऑनलाइन)।
13. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
14. डा. राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
15. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ (ऑनलाइन)।
16. श्री प्रतीक कुमार, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, शुआट्स, प्रयागराज।
17. श्री अजय कुमार मिश्रा, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
18. श्री सत्येन्द्र, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
19. श्री हिमांशु यादव, जूनियर असिसटेंट, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।